# गुप्तों का आर्थिक जीवन

25th lecture by -
Mamta Rani
History Depart.
SNSRKS COLLEGE
SAHARSA
27-04-2020

Scanned with CamScanner

# गुप्तों का आर्थिक जीवन :-

25th lecture.

→ गुप्त राजाओं का शासन काल आर्थिक दृष्टि से समृद्धि एवं सम्पन्नता का काल माना जाता है। इस काल में कृषि लोगो का मुख्य व्यवसाय था। बृहत्संहिता के अनुसार तीन फसलों की जानकारी थी। कृषि अधिकांशतः वर्षापरही निर्भर थी।

→ इत्सिंग के अनुसार चावल और जौ प्रमुख फसलें थी। कालिदास ने ईख तथा धान की खेती का उल्लेख किया है।

→ गुप्तकालीन आर्थिक जीवन की कुछ झलक हमें फाहियान से मिलती है। मनु और गौतम स्मृतिकारो ने राजा को भूमि का अधिपति बताया है। आर्थिक उपयोगिता की दृष्टि से भूमि के कई प्रकार बताए गए है। जैसे -

(1) क्षेत्र - खेती के लिए उपयुक्त भूमि
(2) वास्तु - वास करने योग्य भूमि
(3) खिल - जो भूमि जोती नही जाती थी
(4) अप्रहत - बिना जोती हुई जंगली भूमि।
(5) चारागाह - पशुओं के चारा योग्य भूमि।

→ अमरकोष में 12 प्रकार की भूमि का उल्लेख मिलता है। सिंचाई का सर्वोत्तम उदाहरण स्कन्दगुप्त का भूनागढ़ अभिलेख है। कपड़े का निर्माण करना इस काल का सर्व-प्रमुख उद्योग था। अमरकोष में कताई, बुनाई, हथ-करघा, धागे इत्यादि का संदर्भ आया है। कुषाण काल में सिले हुए कपड़ो का प्रचलन हो गया था।

→ मौर्योत्तर युग में विशेषकर कुषाण सातवाहन काल में व्यापारियों की द्रुत प्रगति के फलस्वरूप सार्थवाह एवं श्रेणीबल, श्रेणिक एवं विभिन्न व्यावसायिक श्रेणियों के अनगिणत उल्लेख मिलते है।

→ अपने-अपने व्यवसाय के हितों के अतिरिक्त श्रेणियों को

Scanned with CamScanner

अन्य सामाजिक पानी की सुविधाओं से युक्त आश्रय गृहों, जलाशयों, उद्यानों, मंदिरों आदि का निर्माण। ये श्रेणियां बैंकों का भी कार्य करती थी। मंदसौर अभिलेख से पता चलता है कि रेशम बुनकरों की श्रेणी ने एक भव्य सूर्य मंदिर का निर्माण कराया था। निम्न नगर के श्रेणी अपने सिक्के जारी करते थे जैसे - तक्षशिला, कौशाम्बी, विदिशा आदि। उत्तर पश्चिमी भारत में तक्षशिला नगर का शासन व्यापारियों के एक निगम द्वारा संचालित किया जाता था।

## मुद्रा संबंधी साक्ष्य के आधार पर व्यापारी :-

| स्थान | व्यापारियों की श्रेणी |
|---|---|
| इंदौर | तैलियों की श्रेणी |
| विदिशा | हाथी दांत के कारीगर |
| उज्जयिनी | अनाज व्यापारी |
| नासिक | बुनकर |
| मंदसौर | रेशम बुनकर |
| मथुरा | आटा पीसने वाले कारीगर |
| कौशाम्बी | गन्धिक |

→ एक प्रसिद्ध अभिलेख में मंदसौर के रेशम बुनकरों की एक श्रेणी द्वारा धर्मार्थ के रूप में प्रचुर दान का उल्लेख है। वाणिज्यिक निकायों को उनके वास्तविक कार्य या स्वरूप के आधार पर विभाजन -

→ ~~एक प्रसिद्ध अभिलेख में मंदसौर के रेशम बुनकरों की एक श्रेणी द्वारा धर्मार्थ~~

→ श्रेष्ठ कुलिक निगम - श्रेष्ठियों, हस्तशिल्पियों एवं श्रेणियों का केन्द्रीय निगम या संघ था - विभिन्न

जातियों के व्यापारियों का समूह। श्रेणी एक ही जाति के व्यापारियों के समूह। निगम - एक ही नगर के निवासियों का समूह। व्यापारियों की एक समिति होती थी जिसे निगम कहा जाता था। निगम का प्रधान श्रेष्ठि कहलाता था। व्यापारियों के समूह को सार्थ तथा उनके नेताओं को सार्थवाह कहा जाता था।

→ नगर श्रेष्ठिन बैंकरों एवं साहूकार के रूप में कार्य करते थे।
→ आर्थिक स्थिति की जानकारी के लिए मुद्राशास्त्र अत्यन्त लाभदायक होते हैं। दुर्भाग्यवश गुप्तकालीन सिक्कों का अध्ययन अधिकांशतः राजनीतिक एवं सांस्कृतिक पक्षों के लिए किया जाता रहा है।

→ स्वर्ण मुद्राओं पर गुप्त राजाओं के स्पष्ट चित्र हैं, ये न केवल सेना और प्रशासनिक अधिकारियों को वेतन चुकाने में अपितु भूमि की खरीद बिक्री में भी सहायक रहे। सोने के सिक्के को गुप्त अभिलेखों में दीनार कहा जाता था। चांदी के सिक्कों का प्रयोग स्थानीय लेन-देन में किया जाता था। जहाँ तक चांदी के सिक्कों का प्रश्न है, वे सर्वप्रथम चंद्रगुप्त II की शकों के विरुद्ध विजय के पश्चात् आरंभ हो गये थे।

→ रामगुप्त को छोड़कर चन्द्रगुप्त II से पूर्व के तांबे के सिक्के नहो के बराबर हैं। कुषाणों के विपरीत गुप्तों के तांबे के सिक्के बहुत ही कम मिलते हैं। जन सामान्य में मुद्रा का प्रयोग जितना कुषाणों के समय में होता था उतना अब (गुप्तकाल) में नहीं रहा। सोने-चांदी, तांबे आदि विभिन्न धातुओं के सिक्कों की जो बहुलता प्राक गुप्तकाल में दृष्टिगोचर होती थी वह गुप्त युग में नहीं।

→ रामगुप्त को छोड़कर चन्द्रगुप्त द्वितीय से पूर्व के तांबे के सिक्के बहुत ही कम मिलते हैं। जन सामान्य में मुद्रा का

Scanned with CamScanner

प्रयोग जितना कुषाणों के समय में होता था उतना अब नहीं रहा।

→ फाह्यान के अनुसार साधारण जनता रोज के विनिमय में वस्तुओं की अदला-बदली अथवा कौड़ियों से काम चलाती थी। विदेशी व्यापार की दृष्टि से इस काल में दो सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए-

(a) रोमन व्यापार का पतन

(b) दक्षिण भारत के तीनों प्रसिद्ध बन्दरगाह मुजीरिस, अरिकामेडु तथा कावेरीपत्तनम का भी पतन।

→ चीन और भारत का व्यापार इस समय संभवतः वस्तु विनिमय प्रणाली पर आधारित था क्योंकि कहीं भी किसी भी सिक्के का अवशेष नहीं मिला है।

→ विदेशों को निर्यात की जानेवाली वस्तुओं में सर्वाधिक महत्वपूर्ण मसाला था। इस समय बंगाल में ताम्रलिप्ति प्रमुख बंदरगाह था। जहाँ से चीन, लंका, जावा, सुमात्रा आदि देशों के साथ व्यापार होता था। पश्चिमी भारत का प्रमुख बन्दरगाह भृगुकच्छ था जहाँ से पश्चिमी देशों के साथ समुद्री व्यापार होता था।

Scanned with CamScanner